

बृहस्पाते देव की आरती: ॐ जय बृहस्पाते देवा

पद 1

ॐ जय बृहस्पति देवा, जय बृहस्पति देवा।
छिन-छिन भोग लगाऊँ, कदली फल मेवा॥

पद 2

तुम पूर्ण परमात्मा, तुम अंतर्यामी।
जगतपिता जगदीश्वर, तुम सबके स्वामी॥

पद 3

चरणामृत निज निर्मल, सब पातक हर्ता।
सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्ता॥

पद 4

तन, मन, धन अर्पण कर, जो जन शरण पड़े।
प्रभु प्रकट तब होकर, आकर द्वार खड़े॥

पद 5

दीनदयाल दयानिधि, भक्तन हितकारी।
पाप दोष सब हर्ता, भव बंधन हारी॥

पद 6

सकल मनोरथ दायक, सब संशय तारो।
विषय विकार मिटाओ, संतन सुखकारी॥

पद 7

जो कोई आरती तेरी, प्रेम सहित गावे।
ज्येष्ठानन्द बन्द सो, सो निश्चय पावे॥